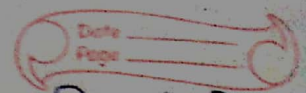


## हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति



\* हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति को उत्तरी संगीत पद्धति भी कहते हैं। यह चैनई मैसूर तथा आन्ध्र प्रदेश को छोड़कर शेष समस्त भारत में प्रचलित है।

1. हिन्दुस्तानी पद्धति में शुद्ध-विकृत मिलाकर कुल 12 स्वर स्थान हैं।

2. इस पद्धति में आलाप गान स्वीकार किया गया है।

3. ठाठ राग का सिद्धान्त स्वीकार किया गया है।

4. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में दस ठाठ से रागों की उत्पत्ति हुई है।

5. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के शुद्ध स्वर को बिलावल - ठाठ कहा जाता है।

## लोकगीत

लोकगीत जनमानस के स्वाभाविक उद्गारों का प्रस्तुतन है। लोकगीत ही जनता की भाषा है। (महात्मा गाँधी)

लोक शब्द से अभिप्राय व्यक्तियों के ऐसे समूह से होता है जो सामान्य संस्कार सामान्य गौरव सामान्य चिन्तन, सामान्य शास्त्रज्ञान आदि तत्वों से परिपूर्ण होते हैं जो इस दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय मानव समाज को लोक कहते हैं। इस लोक की भावनाओं को प्रकट करने वाली वाणी को लोकगीत कहते हैं।

लोक जीवन में लोकगीतों की एक निरंतर धारा अनादि काल से चली आ रही है। ये लोक गीत मानव हृदय की प्रकृति भावनाओं की तन्मयता की तीव्रतम अवस्था की गति हैं जो स्वर और ताल को प्रधानता न देकर लय अधिकाधिक धुन प्रधान होते हैं।

## वालगीत

वर्तमान में प्राइमरी कला के साथ मानसिक रूप से अधिक विकसित नहीं होते उन्हें गीतों

की शिक्षा केते समय उनके मानसिक विकास, अनिच्छा तथा शाब्दिक विकास को ध्यान में रखना आवश्यक है। शाब्दिक दृष्टि से सरल शब्दावली और मनोरंजनात्मक विषय से सम्बन्धित गीतों उनको पढ़ाना लाभप्रद है।

### लोरी

यह एक प्रकार का गीत है जो बालक को लोरी के रूप में सुनाया जाता है। इसमें बालक जब सोता है, तो उसकी माँ उसे लोरी गाकर सुलाती है। इनकी धुन व पद्य निश्चित होते हैं।

### गोरखन्द

उँट की सजावट करते समय काठी के पास से गोरखन्द बार्देन पर बाँधा जाता है। इसमें उँट का मृगार् वर्णन मिलता है राजस्थान का बड़ा लोकप्रिय गीत है और लगभग समस्त मकरस्थलीय प्रदेश में गाया जाता है। अजमेर के सांसी-कंजर और मारवाड़ की धूमर नृत्य करती बालिकाएँ भी इसे गाती हैं।